

सिंहभूम संसदीय सीट के लिए 14
अधिकारियों के नामांकन वैद्य, 7 नामांकन रद्द



दबंग हिन्द, संवाददाता

चार्चाबासा। लोकसभा चुनाव 2024

के चौथे चरण के तहत होनेवाले सिंहभूम संसदीय सीट के मतदान को लेकर शुक्रवार को स्कूलटीने में कूल 14 अधिकारियों के नामांकन पत्र याच्य पाये गये, जबकि 07 अधिकारियों के नामांकन पत्र अयोग घोषित किए गए, इसके तहत भाजपा की ओर काड़ा, ज्ञामुरा की जोड़ा, माझी, बाहुन जनसाज पार्टी के पदेसी लाल मुड़ा, ज्ञारखंड मुक्ति मोर्चा (उलगुलुन) के कृष्णा मार्डी, ज्ञारखंड पार्टी के चिरप्रसेन सिंकू, साशानित यूनिटी संस्टर आपां वैंडया (कम्युनिस्ट) के पानमणि सिंह, राइट

टूरिकल पार्टी की ओर सिंह देवगम, अफेंडकराट आईटी पार्टी ऑफ ईड्यो के विश्व विजय मार्डी, पीपुल्स पार्टी ऑफ ईड्यो (डेमोक्रेटिक) के सुधा रानी बेसरॉन एवं निर्दलीय अधिकारी आशा कुमारी निमला बर्ला ने कहा कि आज विशेष रूप से मासिक सेवा प्राधिकार गुमला श्रमितों निमला बर्ला, स्वार्थ लोक अदालत के सदस्य एवं श्री शंभू सिंह लीगां एड डिफेंस कार्तिसल के बुदेवर गोप एवं अन्य अधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्ञवलित कर किया गया। इस मौके पर साचिव श्रमितों निमला बर्ला ने कहा कि आज विशेष रूप से मासिक सेवा प्राधिकार अदालत का आयोजन किया गया है, जो की विशेष रूप से चेक बांस एवं बिजली से संबंधित मामलों के निष्पादन के लिए आयोजित किया गया है। इतेक माह व्यवहार युग्मला में अधिकारी कुमारी और तुमस बिक्री के अलावे कालिंग सेना के हरि उत्तां और लोकहित अधिकारी पार्टी की सुधा सिंह के नामांकन अंतर्गत यार गए जिन्हें निरस्त कर दिया गया है।

अधिकारियों परिषद की गुमला जिला इकाई का पुनर्गठन

दबंग हिन्द, संवाददाता

गुमला। अधिकारियों परिषद, ज्ञारखंड की गुमला जिला इकाई के पुनर्गठन की घोषणा, प्रदेश अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार मिश्र ने सत्र 2024 - 2027 के लिए निम्नवत् किया : - सरकार : सर्वश्री अशेंग कुमार पाठेड़ रम्पुलूर व सुधार कुमार यादेय। अध्यक्ष :- श्री शशिरंजन अंतर्राष्ट्रीय उच्चाध्यक्षः - सर्वश्री विष्णु मिस्ट्री व हेमन्त कुमार राय महासचिवः - श्री दिनेश महाना सचिव अस्त्रीय अधिकारी कुमार, अंतर्राष्ट्रीय आकाश व अमितालं वकंजे क्रोधार्थक अध्यक्षः - श्री रोहन किंग राजू याच्यव्रहम प्रमुखः - श्री कौशिक राम न्यायकर्त्त्र प्रमुखः - श्री प्रकाश चन्द्र गोप कार्यसंचारी सदस्य :- सर्वश्री सच्चिवानंद गोप, संदीप रघुवर, मुकेश कुमार पाठेड़, दिलोनी कुमार पाठेड़, शैलेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र ओहंदार, अजय साह, परमेश्वर साह व राजनारायण नाना। देश अध्यक्ष ने गुमला - तोहरदगा - सिमेडो जिलों के समव्यक्त के लिए श्री ललदेव प्रसाद

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच ने स्वास्थ्य कार्यक्रम का किया आयोजन



दबंग हिन्द, संवाददाता

रामगढ़। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ केंट शाहा द्वारा शनिवार को प्रेषणावाक कहानियाँ सुनाई जिससे बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय उत्तमता हुए। साथ ही साथ बच्चों के बीच छाल एवं विशिष्टकरण का विवरण किया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा अध्यक्ष अग्रवाल, युवा सचिव धीरज बंसल, युवा कांगाध्यक्ष श्रीजयेन्द्र मेवाड़, पूर्व अध्यक्ष नीलांद अग्रवाल, एवं युवा सदस्यों ने काफी उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरण के सदस्य सह प्रान्तीय संगठन आयाम टोली के सदस्य श्री सहित कई अधिकारियों ने भी विवरण प्रमाणिक वालों में होने वाले लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने का आद्वान करते हुए जन जगतों वाले अधिकारियों के बीच अधिकारियों के बीच शारीरिक फिटनेस के बारे में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। स्कूलों बच्चों के साथ युवा मंच के सदस्य एवं स्कूल के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया। इस अवसर के प्रश्नोत्तरण के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया।

रामगढ़। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ केंट शाहा द्वारा शनिवार को प्रेषणावाक कहानियाँ सुनाई जिससे बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय उत्तमता हुए। साथ ही साथ बच्चों के बीच छाल एवं विशिष्टकरण का विवरण किया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा अध्यक्ष अग्रवाल, युवा सचिव धीरज बंसल, युवा कांगाध्यक्ष श्रीजयेन्द्र मेवाड़, पूर्व अध्यक्ष नीलांद अग्रवाल, एवं युवा सदस्यों ने काफी उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरण के सदस्य सह प्रान्तीय संगठन आयाम टोली के सदस्य श्री सहित कई अधिकारियों ने भी विवरण प्रमाणिक वालों में होने वाले लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने का आद्वान करते हुए जन जगतों वाले अधिकारियों के बीच अधिकारियों के बीच शारीरिक फिटनेस के बारे में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। स्कूलों बच्चों के साथ युवा मंच के सदस्य एवं स्कूल के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया। इस अवसर के प्रश्नोत्तरण के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया।

रामगढ़। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ केंट शाहा द्वारा शनिवार को प्रेषणावाक कहानियाँ सुनाई जिससे बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय उत्तमता हुए। साथ ही साथ बच्चों के बीच छाल एवं विशिष्टकरण का विवरण किया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा अध्यक्ष अग्रवाल, युवा सचिव धीरज बंसल, युवा कांगाध्यक्ष श्रीजयेन्द्र मेवाड़, पूर्व अध्यक्ष नीलांद अग्रवाल, एवं युवा सदस्यों ने काफी उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरण के सदस्य सह प्रान्तीय संगठन आयाम टोली के सदस्य श्री सहित कई अधिकारियों ने भी विवरण प्रमाणिक वालों में होने वाले लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने का आद्वान करते हुए जन जगतों वाले अधिकारियों के बीच अधिकारियों के बीच शारीरिक फिटनेस के बारे में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। स्कूलों बच्चों के साथ युवा मंच के सदस्य एवं स्कूल के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया। इस अवसर के प्रश्नोत्तरण के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया।

रामगढ़। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ केंट शाहा द्वारा शनिवार को प्रेषणावाक कहानियाँ सुनाई जिससे बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय उत्तमता हुए। साथ ही साथ बच्चों के बीच छाल एवं विशिष्टकरण का विवरण किया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा अध्यक्ष अग्रवाल, युवा सचिव धीरज बंसल, युवा कांगाध्यक्ष श्रीजयेन्द्र मेवाड़, पूर्व अध्यक्ष नीलांद अग्रवाल, एवं युवा सदस्यों ने काफी उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरण के सदस्य सह प्रान्तीय संगठन आयाम टोली के सदस्य श्री सहित कई अधिकारियों ने भी विवरण प्रमाणिक वालों में होने वाले लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने का आद्वान करते हुए जन जगतों वाले अधिकारियों के बीच अधिकारियों के बीच शारीरिक फिटनेस के बारे में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। स्कूलों बच्चों के साथ युवा मंच के सदस्य एवं स्कूल के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया। इस अवसर के प्रश्नोत्तरण के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया।

रामगढ़। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ केंट शाहा द्वारा शनिवार को प्रेषणावाक कहानियाँ सुनाई जिससे बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय उत्तमता हुए। साथ ही साथ बच्चों के बीच छाल एवं विशिष्टकरण का विवरण किया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा अध्यक्ष अग्रवाल, युवा सचिव धीरज बंसल, युवा कांगाध्यक्ष श्रीजयेन्द्र मेवाड़, पूर्व अध्यक्ष नीलांद अग्रवाल, एवं युवा सदस्यों ने काफी उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरण के सदस्य सह प्रान्तीय संगठन आयाम टोली के सदस्य श्री सहित कई अधिकारियों ने भी विवरण प्रमाणिक वालों में होने वाले लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने का आद्वान करते हुए जन जगतों वाले अधिकारियों के बीच अधिकारियों के बीच शारीरिक फिटनेस के बारे में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। स्कूलों बच्चों के साथ युवा मंच के सदस्य एवं स्कूल के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया। इस अवसर के प्रश्नोत्तरण के द्वारा ने व्यायाम करका व्यायाम से होने वाले खेलों के साथ योगदान किया गया।

रामगढ़। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ केंट शाहा द्वारा शनिवार को प्रेषणावाक कहानियाँ सुनाई जिससे बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय उत्तमता हुए। साथ ही साथ बच्चों के बीच छाल एवं विशिष्टकरण का विवरण किया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा अध्यक्ष अग्रवाल, युवा सचिव धीरज बंसल, युवा कांगाध्यक्ष श्रीजयेन्द्र मेवाड़, पूर्व अध्यक्ष नीलांद अग्रवाल, एवं युवा सदस्यों ने काफी उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरण के सदस्य सह प्रान्तीय संगठन आयाम टोली के सदस्य श्री सहित कई अधिकारियों ने भी विवरण प्रमाणिक वालों में होने वाले लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने का आद्वान करते हुए जन जगतों वाले अधिकारियों के बीच अधिकारियों के बीच शारीरिक फिटनेस के बारे में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। स्कूलों बच्चों के साथ युवा मंच के सदस्य एवं स्कूल के

दुनिया का सबसे महंगा चुनाव है गंभीर चुनौती

विं श्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लोकसभा चुनाव 2024 अनेक दृष्टियों से यादगार, चर्चित, आक्रामक एवं ऐतिहासिक होने के साथ-साथ अब तक का सबसे महंगा एवं दुनिया का सबसे खर्चीला चुनाव है। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज की हालिया रिपोर्ट के अनुसार इस बार का चुनावी खर्च एक लाख बीस हजार करंडु रुपये के खर्च के साथ दुनिया का सबसे महंगा चुनाव होने की ओर अग्रसर है। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव के खर्च की तुलना में इस बार दुगुना खर्च होगा। चुनाव प्रक्रिया अत्यधिक महंगी एवं धन के वर्चस्व वाली होने से राजनीतिक मूल्यों का विसंगतिपूर्ण एवं लोकतंत्र की आत्मा का हनन होना स्वाभाविक है। चुनाव जनतंत्र की जीवनी शक्ति है। यह राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिबिम्ब होता है। जनतंत्र के स्वस्थ मूल्यों को बनाए रखने के लिए चुनाव की स्वस्थता, पारदर्शिता, मितव्यता और उसकी शुद्ध अनिवार्य है। चुनाव की प्रक्रिया गलत होने पर लोकतंत्र की जड़ें खोखली होती चली जाती हैं। करोड़ों रुपए का



ललित गग

दुनिया की आर्थिक बदहाली
एवं युद्ध की विभीषिका से
चौपट काम-धंधों एवं जीवन
संकट में लोकसभा के चुनाव
कहाँ कोई आदर्श प्रस्तुत कर
पा रहे हैं? इस बात का
अंदाजा इसी बात से लगाया
जा सकता है, जो लोग चुनाव
जीतने के लिए इतना अधिक
खर्च कर सकते हैं तो वे
जीतने के बाद क्या करेंगे,
पहले अपनी जेब को भरेंगे,
अर्थव्यवस्था पर आर्थिक
दबाव बनायेंगे। और मुख्य
बात तो यह है कि यह सब
पैसा आता कहाँ से है? कौन
देता है इतने रुपये? धनादृष्टि
अपनी तिजोरियां तो खोलते
ही है, कई कम्पनियां हैं जो
इन सभी चुनावी दलों एवं
उम्मीदवारों को पैसे देती हैं,
चुंदे के रूप में।

A close-up photograph of a person's hand wearing a white glove, holding a long, thin, white probe or stylus. The probe is positioned vertically, pointing upwards. The background is a dark, abstract space filled with glowing, organic, branching structures in shades of red, orange, yellow, and green, resembling a microscopic view of biological tissue or a neural network. The overall composition is artistic and futuristic.

शासन प्रणाली पर अनेक प्रश्नचिह्न खड़े होते हैं। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज रिपोर्ट के मुताबिक आमतौर पर चुनाव अभियान के लिए धन अलग-अलग स्रोतों से अलग-अलग तरीकों से उमीदवारों और राजनीतिक दलों के पास आता है। राजनीतिक दलों और उमीदवारों को चुनाव खर्च के लिए मुख्य रूप से रियल इंस्टेट, खनन, कारपोरेट, उद्योग, व्यापार, ठेकेदार, विटफण्ड कंपनियां, ट्रांसपोर्ट, परिवहन ठेकेदार, शिक्षा उद्यमकर्ता, एनआआई, फिल्म, दूरसंचार जैसे प्रमुख स्रोत हैं। इस साल डिजिटल मीडिया द्वारा प्रचार बहुत ज्यादा हो रहा है। राजनीतिक दल पेशेवर एजेंसियां की सवालें ले रहे हैं। इनसे सबसे अधिक राजनीतिक दलों और उमीदवारों द्वारा प्रचार अभियान, रैली, यात्रा खर्च के साथ-साथ सीधे तौर पर गोपनीय रूप से मतदाताओं को सीधे नकदी, शराब, उपहारों का वितरण भी शामिल है। देश में 1952 में हुए पहले आम चुनाव की तुलना में 2024 में 500 गुणा अधिक खर्च होने का अनुमान है। प्रति मतदाता 6 पैसे से बढ़कर आज 52 रुपये खर्च होने का अनुमान है। हालांकि रिपोर्ट के मुताबिक चुनाव में होने वाले वास्तविक खर्च और अधिकारिक तौर पर दिखाए गए खर्चों में काफी अंतर है। रिपोर्ट के मुताबिक 2019 के लोकसभा चुनाव में देश के 32 राज्यीय और राज्य पार्टियों द्वारा अधिकारिक तौर पर सिर्फ 2,994 करोड़ रुपये का खर्च दिखाया। इनमें दिखाया गया कि राजनीतिक दलों ने 529 करोड़ रुपये उमीदवारों को चुनाव लड़ने के लिए दिए थे। रिपोर्ट के मुताबिक चुनाव में राजनीतिक दलों द्वारा

निर्वाचन आयोग में पेश खर्च का ब्यौरा और वास्तविक खर्च के साथ-साथ उम्मीदवारों द्वारा अपने स्तर पर किए जा रहे खर्चों में काफी अंतर है। अमेरिकी चुनाव पर नजर रख वाली एक वेबसाइट के रिपोर्ट का हवाला देते हुए, सेंट्रल फॉर मीडिया स्टडीज के अध्यक्ष एन भास्कर राव ने कहा कि यह 2020 के अमेरिकी चुनावों पर हुए खर्च के लगभग बराबर है, जो 14.4 बिलियन डॉलर यानी 1 लाख 2 करोड़ रुपये था। उन्होंने कहा कि दूसरे शब्दों में कहें तो भारत में 2024 में दुनिया का सबसे बड़ा चुनाव अब तक का सबसे महंगा चुनाव साबित होगा।

भारत में होने वाले चुनाव में हो रहे बेसमार खर्च की तपीकी समूची दुनिया तक पहुंच रही है। समूची दुनिया के तमाम देशों में भारत के चुनाव को न केवल दम साध कर देख जा रहा है बल्कि इन चुनाव के खर्चों एवं लगातार महंग होते चुनाव की चर्चा भी पूरी दुनिया में व्याप्त है। लोकसभा चुनाव में भाजपा, कांग्रेस, सपा, बसपा, तृणमूल कांग्रेस आदि दलों एवं उनके उम्मीदवारों ने मतदाताओं के प्रभावित करने के लिये तिजोरियां खोल दी हैं। यह चुनाव राष्ट्रीय मसलों के मुकाबले राजनीतिक दलों के हित सुरक्षित रखने के बादे पर ज्यादा केंद्रित लग रहा है और टकराव ने मुद्दे थोड़े ज्यादा तीखे हैं। लेकिन अगर मुद्दों से अभियांत्रों की बात करें तो यह खबर ज्यादा ध्यान खींच रखती है कि इस बार चुनाव अब तक के इतिहास में सबसे खचीला साबित होने जा रहा है। इस चुनावों के अत्यधिक खचीले होने का असर व्यापक होगा। चुनाव के तर्वे को ग

करके अपनी रोटियां सेंकने की तैयारी में प्रत्याशी वह सब
कुछ कर रहे हैं, जो लोकतंत्र की बुनियाद को खोखला
करता है। काफी लंबे और जटिल प्रक्रिया के तहत चलने
वाले चुनाव में जनता के बीच समर्थन जुटाने के लिए
उम्मीदवार जितने बड़े पैमाने पर अधिकायान चलाते हैं, उसमें
उन्हें स्थानीय कार्यकर्ताओं से लेकर सामग्रियों और
जनसंपर्कों तक के मामले में कई स्तरों पर खर्च चुकाने
पड़ते हैं। यों किसी भी देश में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत
होने वाले चुनावों में ऐसा ही होता है, लेकिन भारत में इसी
कसौटी पर खर्च में कई गुना ज्यादा होना चिन्ता का सबब
बनना चाहिए।

दुनिया की आर्थिक बदलाली एवं युद्ध की विभिन्निका से चौपट काम-धर्थों एवं जीवन संकट में लोकसभा के चुनाव कहाँ कोई आदर्श प्रस्तुत कर पा रहे हैं? इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है, जो लोग चुनाव जीतने के लिए इतना अधिक खर्च कर सकते हैं तो वे जीतने के बाद क्या करेंगे, पहले अपनी जेब को भरेंगे, अर्थव्यवस्था पर आर्थिक दबाव बनायेंगे। और मुख्य बात तो यह है कि यह सब पैसा आता कहाँ से है? कौन देता है इतने रुपये? धनाद्य अपनी तिजोरियाँ तो खोलते ही हैं, कई कम्पनियाँ हैं जो इन सभी चुनावी दलों एवं उम्मीदवारों को पैसे देती हैं, चंदे के रूप में। चन्दा के नाम पर यदि किसी बड़ी कम्पनी ने धन दिया है तो वह सरकार की नीतियों में हेरफेर करवा कर लगाये गये धन से कई गुणा वसूल लेती है। इसीलिये वर्तमान देश की राजनीति में धनबल का प्रयोग चुनाव में बड़ी चुनौती है। सभी दल पैसे के दम पर चुनाव जीतना चाहते हैं, जनता से जुड़े मुझे एवं समस्याओं के समाधान के नाम पर नहीं। कोई भी इमानदारी और सेवाभाव के साथ चुनाव नहीं लड़ना चाहते हैं। राजनीति के खिलाड़ी सत्ता की दौड़ में इतने व्यस्त है कि उनके लिए विकास, जनसेवा, सुरक्षा, महामारियाँ, युद्ध, आतंकवाद की बात करना व्यर्थ हो गया है। सभी पार्टियाँ जनता को गुमराह करती नजर आती है। सभी पार्टियाँ नोट के बदले वोट चाहती है। राजनीति अब एक व्यवसाय बन गई है। सभी जीवन मूल्य बिखर गए हैं, धन तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सत्ता का अर्जन सर्वोच्च लक्ष्य बन गया है। लोकसभा चुनाव की सबसे बड़ी विडम्बना एवं विसंगति है कि यह चुनाव आर्थिक विषमता की खाई को पाटने की बजाय बढ़ाने वाले साबित होने जा रहे हैं। आखिर कब तक चुनाव इस तरह की विसंगतियों पर सवार होता रहेगा?

प्रकृति की ताकत के आगे असहाय वैज्ञानिक

की आग नैनीताल हार्डकर्ट तक पहुंच गई है। नैनीताल, भीमताल, रानीखेत, अल्मोड़ा, कमाऊ के जंगल धधक रहे हैं। सेना एवं स्थानीय प्रशासन आग बुझाने में लगी। आग पर काबू पाने में बहुत समय लगा, जिससे जंगल ही बर्बाद हो गया। इसके पहले भी हिमालय की तराई में भू-स्खलन की सैकड़ों घटनाएं हो चुकी हैं। पहाड़ फट रहे हैं। पिछले दो दशकों में हिमालय के पहाड़ों को खोदकर जिस तरह बांध बनाए गए हैं। पावर स्टेशन खड़े किए गए हैं। रोड बनाने के लिए पहाड़ों को काटा गया है। रेल मार्ग के लिए पहाड़ों को एक-दूसरे से जुदा कर दिया गया है। इन सब कृत्यों से शांत पहाड़ों में ऐसा कंपन शुरू कर दिया गया, जिसके कारण हिमालय अब अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए, मानवीय विकास की कल्पनाओं और संरचनाओं को एक ही झटके में धूल-धूसरित कर रहा है।

हिमालय क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। पिछ्ले साल ही शिमला, उत्तराखण्ड के कई इलाकों में भूस्खलन की बड़ी-बड़ी घटनाएं हुईं। यहाँ का मौसम भी बड़ी तेजी के साथ बदलने लगा। अप्रैल के महीने में जन जैसी गर्म पहाड़ों में पड़ रही है। हिमालय के ग्लैशियर पिछले लगे। भारत में नहीं, बल्कि दुनिया के कई अन्य देशों में प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप बढ़ रहा है। जो मानवीय एवं प्रकृतिजन्य जीवन के लिए सबसे बड़ा संकट माना जा

रहा है। जिस तरह से इंग्रास्टूकर के लिए पहाड़ों और प्राकृतिक संरचनाओं को खाली किया गया। इसका विरोध समय-समय पर वैज्ञानिकों, साधु संतों और (शंकराचार्यों) ने भी किया था। भारत सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। परिणाम स्वरूप प्राकृतिक एवं धार्मिक स्थल भी अब सुरक्षित नहीं हैं। अयोध्या में रामलला के मंदिर का निर्माण हुआ। मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर चारों शंकराचार्यों ने कहा, जब तक मंदिर के शिखर का निर्माण नहीं होता है ऐसी अवस्था में भगवान प्राण प्रतिष्ठा नहीं हो सकती है। सरकार ने अहंकार के चलते, सनातन धर्म के सबसे बड़े धर्म गुरुओं (शंकराचार्यों) की बात भी नहीं मानी। जबकि उन्होंने स्पष्ट रूप से चेतावनी देते हुए कहा था यदि अधूरे मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होगी, तो प्रकृति-जन्य आपदा आना निश्चित है। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में चारों शंकराचार्य में से कोई भी शंकराचार्य शामिल नहीं हुआ। अब जिस तरह की प्राकृतिक आपदाएं दखने को मिल रही हैं। उसके बाद यही कहा जा सकता है, प्रकृति के नियमों का पालन नहीं किए जाने पर प्रकृति अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए प्रयास कर रही है। उसे ही प्राकृतिक आपदा कहा जाता है।

यहां केवल भारत की बात नहीं हो रही है। पूरी दुनिया के देशों में जिस तरह से प्रकृति को चुनौती देते हुए मानवीय विकास और मानवीय अहंकार के चलते

जिस तरह से विकास और आग्नेयू शास्त्रों के माध्यम से राज करने का जो प्रयास हो रहा है, उसके कारण दुनिया के देश विनाश के रास्ते पर चल पड़े हैं। अब इसे प्राकृतिक आपदा कहें, या ईश्वर का प्रकोप कहें। इसमें सभी एक राय नहीं हो सकते हैं। विकास की इस दौड़ में मानव जाति अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति अथवा ईश्वर को चुनौती देने का काम कर रही है। यही कारण है, कि दुनिया के सारे देशों में अब प्राकृतिक आपदाएं बढ़ी तेजी के साथ बढ़ रही हैं। विकासित राष्ट्र भी अब इससे अछूते नहीं रहे। अमेरिका, यूरोपीय देश, रूस, चीन जैसी महाशक्तियों को भी प्राकृतिक आपदा झेलनी पड़ रही है। अरब के देशों में बाढ़ आ रही है, जहां रेत का समंदर है वहां बारिश का सैलाब बता रहा है कहीं कुछ तो गलत हुआ है। लगातार भूकंप के झटके दुनियां को सचेत कर रहे हैं, सुप्त ज्वालामुखी अब मुंह खोलने को तैयार नजर आने लगे हैं। ये प्राकृतिक आपदाओं से विकास इनफस्ट्रक्चर नष्ट हो रहा है। वैसे भी मानवीय शक्ति जब-जब भगवान बनने की कोशिश करती है, तब-तब ईश्वर का (प्रकृति) प्रकोप इसी तरह से सामने आता है। इस खतरे की घंटी से सभी को सावधान होने की जरूरत है। भौतिक संसाधन और कृत्रिम विकास अल्पकालीन होते हैं, इन्हें दीर्घकालीन नहीं बनाया जा सकता है। इस तथ्य को सभी को समझना जरूरी है।

घोषणा पत्र की क्या जरूरत



संजय गोस्वामी

आ ज कल चुनाव में घोषणा पत्र पर एक दूसरे पर वार पे वार किये जा रहे हैं ही इसकी जरूरत ही नहीं क्योंकि दोनों का काम जनता ने देख लिया है वो ना तो घोषणा पत्र का पन्ना पढ़ कर बोट करने वाली है ना ही घोटाला पर किसी के लिए वो घोटाला लगेगा किसी के लिए सोची समझी नीति और कोई कुछ भी ना लें और नोटा पर बोट कर दें इसलिए चुनाव में लोगों की दिलचस्पी नहीं दिखा जो पहले थी अब इसपर नए सिरे से सोचेने की जरूरत है बोट मेरा अधिकार है जिसे देना जरूरी है दरअसल हर 10 साल के बाद एंटीइनकॉर्पोरेशनी यानि सत्ता पक्ष में कुछ लोगों का विरोध तो होता ही है अब इतनी बड़ी जनसंघंता है 140 करोड़ लोगों का देश जब मजदूर को खुश करेंगे तो उद्योगपति को नुकसान होगा और जब मजदूर काम करके भी नहीं खा सकेगा तो ऐ भी उद्योगपति को खुश रखना जैसे होगा, बस सेवा ही एक ऐसा है जो एक जीवन का हिस्सा है किसी खेल में कोई हारता है कोई जीतता है लेकिन अपशब्द का प्रयोग किसी भी पार्टी के लिए घातक साबित होगी इसमें शांत रहकर लोगों की सेवा करना चाहिए जो जनता के दिल में जगह बनाएगी जो असली प्रेम होगा सेवा करना इसान को सत्ता या उससे बाहर भी रहकर कर सकते हैं सत्ता में होंगे तो विरोधी आपका टांग खीचेंगे और जब सत्ता में नहीं रहेंगे तो पावर नहीं होगा जीससे आप काम कर सकें लेकिन अनेकों उदाहरण हैं जो सत्ता से अलग रहकर भी लोगों की सेवा की

और उसी आधार पर भगवान राम हो गए जो सबके पूज्य है सेवा के लिए पहली शर्त प्रेम हैं, अर्थात् जिसके दिल में प्रेम हैं, वही सेवा कर सकता है। टॉल्स्टॉय ने कहा है, 'प्रेम स्वर्ग का रास्ता है'। बुद्ध का कथन है, 'प्रेम इंसानियत का एक फूल है और है और प्रेम उसका मध्य'। रामकृष्ण परमहंस ने कहा है, 'प्रेम संसार की ज्योति है'। विक्टर ह्वागों का कहना है, 'जीवन एक फल है और प्रेम उसका मध्य'। रामकृष्ण परमहंस ने कहा है, 'प्रेम अमरता का समूदर है'। कबीर का कथन है, 'जिस घर में प्रेम नहीं, उस मरघट समझ-बिना प्राण के साँस लेने वाली लुहार की धौंकनी।'

द्वाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होए। उपरोक्त पंक्ति के रचयिता कबीरदास हैं। इस पंक्ति के माध्यम से ये कहना चाह रहे हैं कि बड़ी बड़ी उपस्थिति के पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुँच गए, पर

सभी विद्वान न हो सके। अलग—अलग शब्दों में सभी महापुरुषों ने प्रेम का बखान किया है। वास्तव में प्रमाणनव-जाति की बुनियाद है। प्रेम ऐसा ऊँचक है, जो सबको अपनी ओर खींच लेता है। जिसके हृदय में प्रेम है, उसके लिए सब अपने हैं। भारतीय संस्कृति में तो सारी पृथ्वी को एक कटुम्ब माना गया है—'वसुधैव कुटुम्बकम्'। जो सबको प्रेम करता है, उससे बड़ा दौलतमंद कोई नहीं हो सकता। वह दूसरे के दिल में ऊँची भावना पैदा कर देता है। यदि गुस्सा होकर सूरज धूप और रोशनी न दे, धर्ती अन्न न दे, हवा प्राण न दे, तो सोचिए, हम लोगों की क्या हालत होगी! और प्रेम इस तर्क में बड़ी भूल है। ईश्वर ने सारे इंसानों को एक-सा बनाया है। आदमी आदमी में कोई अन्तर नहीं रखखा। अन्तर तो स्वयं आदमी ने पैदा किया है। एक आदमी दिमाग से काम करता है, दूसरा शरीर से।

पहले को हम बड़ा मानते हैं और उसे अधिक पैसा देते हैं, दूसरे को किसान-मजूर कहकर छोटा मानते हैं। और उसकी कम कीमत लगते हैं। लेकिन यह च्याय नहीं है। जो दिमाग काम करता है, उसे भी खाने को अन्न चाहिए और अन्न बिना शरीर की मेहनत के नहीं मिल सकता। शरीर से काम करे वाले को दिमागी काम करने वाले का सहारा चाहिए। इस तरह दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता।

पर आज का समाज उन्हें एक-दूसरे का पूरक या साथी मानता कहाँ है? बुद्धि से काम करने वाला शरीर की मेहनत को छोटा और ओछा मानता है और उससे बचता है। वह मानता है कि मजूर से मेहनत लेने का उसे अधिकार है ईश्वर सच्चिदानन्द है, असीम शक्ति का भंडार है। ईश्वर हमारे लिए एक अनन्त एवं अक्षय शक्तिस्रोत है। यदि आपका आमाविश्वास विलुप्त हो चुका है, आप प्रभु भक्ति के द्वारा उसे पुनः प्राप्त कर सकते हैं। भावपूर्ण प्रार्थना करना एक व्यक्तित्र संबल देता है। धर्मों के नाम पर परस्पर घृणा का प्रचार करनेवाले तथा युद्ध भड़कानेवाले धर्म के तत्त्व एवं उद्देश्य को नहीं समझते हैं। संत किसी एक धर्म के खूटे से नहीं बँधते हैं और सत्य का सत्कार करते हैं, वह चाहे जहाँ भी प्राप्त हो। एक सच्चा मानव मदिर, गिरजा, गुरुद्वारा, मस्जिद को समान रूप से पवित्र मानता है तथा उसे अनेक मार्गों (धर्मों) के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। अपनी व्यक्तिगत अनुभूति के आधार पर ईश्वरतत्त्व को पढ़चाना तथा अपने स्वभाव के अनुसार उसके साथ एक व्यक्तिगत नाता स्थापित करना ईश्वर-प्राप्ति का श्रेष्ठ मार्ग है। अतः घोषणा पत्र पर ध्यान ना देकर काम पर ध्यान देना चाहिए चंद्रयान 3की सफलता ने तो भारत में इतिहास बना दिया अगर घोषणा पत्र पर ध्यान देते तो कुछ नहीं होता एक होकर लगन से काम किया कल किसने देखा है उसकी भविष्यवाणी आज हम नहीं कर सकते हैं हाँ ऐ जरूर कर सकते हैं संकट में एक दूसरे के काम आजायेगा।

